International Journal of Sanskrit Research 2014; 1(1): 45-47

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2014; 1(1): 45-47
© 2014 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-09-2014
Accepted: 27-10-2014

Damodar Shastri
Student, Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga, Bihar, India

Corresponding Author:
Damodar Shastri
Student, Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga, Bihar, India

वामनावतरण महाकाव्य का वैशिष्ट्य

Damodar Shastri

प्रस्तावना

वामनावतरण महाकाव्य के वैशिष्ट्य निरूपण से पूर्व पूर्ववर्ती महाकवियों की चर्चा भी शोध की दृष्टि से आवश्यक हो जाती है। चर्चा के क्रम में जिन महाकवियों ने अपनी प्रतिभा व रचनाओं से काव्यजगत् को आप्यायित किया है, उनका गुणगान करना भी अत्यावश्यक है। प्रसंगानुसार संस्कृतसाहित्य के देदीप्यमान नक्षत्रों में कालिदास भारवि माघ एवं श्रीहर्षप्रभृति महाकवियों का नाम सुविख्यात एवं समुल्लेखनीय हैं जिनकी कविता लोकप्रेरणा दायिनी एवं राजनीतिप्रभृति गुणों से विभूषित व समञ्चित है। महाभारतीय कथा को लेकर वर्णित यह महाकाव्य काव्यजगत् में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। भारवि ने ग्रन्थ के आरम्भ में मंगलात्मक पद्य में श्रीशब्द का प्रयोग किया है और प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में लक्ष्मीशब्द का उल्लेख किया हैं अष्टादश सर्गों में विभक्त भारवि का महाकाव्य ऋतु–पर्वत–सूर्यास्त–जलक्रीडादि वर्णनों से संपृक्त है। इसीलिए भारवि ने काव्यनिर्माण के लिए कतिपय नियमों को निर्दिष्ट किया है, जो सर्वथानुकरणीय है। किसी भी कवि के लिए काव्यनिर्माण में कुछ कुछ चीजें आवश्यक होती है जिसमें पदार्थ की स्फुटता एवं अर्थ की गुरुता सर्वथा अपेक्षित होती है। जेसा कि अधोलिखित पद्य से स्पष्ट है–

स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्।
रचिता पृथगर्थता गिरा न सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्।। (कि. 2–27)

इसी प्रकार महाकवि श्रीहर्ष के द्वारा प्रणीत नैषधीयचरितमहाकाव्य भी काव्य के क्षेत्र में अनुकरणीय व पाण्डित्य के कारण विश्रुत व सार्वजनिक है। गुरुदीक्षा को प्राप्त कर कवि ने गंगा के तीर पर बहुत दिनों तक भगवती भुवनेश्वरी के बीज मंत्र ''ही'' का प्रणव संपुटित जाप करके लोकोत्तर वैदुषी को प्राप्त किया और खण्डन खण्ड खाद्य जैसे दार्शनिक ग्रन्थ का निर्माण कर नैषधीय चरित जैसा महाकाव्य भी लिखा। कवि ने अपने वैदग्ध्य के विषय में स्वमेव कहा है–

ताम्बूलद्वयमासनं च लभते यःकान्यकुब्जेश्वरात्
यःसाक्षात् कुरूते समाधिषु परं ब्रह्मप्रमोदार्णवम्।
यत्काव्यं मधुवर्षिधर्षितपरास्तर्केषु यस्योक्तयः
श्री श्रीहर्ष कवेः कृतिः कृतिमुदेतस्याभ्युदीयादियम्।। (नै. 22/159)

महाकविकालिदास की कविता भी देववाणीसरस्वती का शृंगार है। माधुर्यगुणसम्पन्न रूचिरपद एवं रसों से अभिषिक्त व अर्थगौरव से समलंकृत मञ्जुल प्रयोग से समन्वित काव्य के प्रयोग में कवि सिद्धहस्त है और अपना अद्वितीय स्थान रखना है। कालिदास भारतीयसंस्कृति के अग्रदूत व भारतीय संस्कृति के पुरोधा हैं। इस कवि के काव्य में भारतीय संस्कृति व समाज का प्रतिविम्ब परिलक्षित होता है। महाकवि कालिदास के काव्य में भावपक्ष के साथ–साथ कलापक्ष का भी समावेश देखने को मिलता हैं कवि का काव्य हृदयपक्ष से अनुस्यूत है। आठ सर्गों में विभक्त कवि का कुमारसंभवकाव्य सर्वथा लोकोत्तर व अतुलनीय है यह निर्विवाद कहा जा सकता है।

इसी प्रकार महाकवि माघ की रचना भी लोकोत्तर व नयनाभिराम हैं एक ही रचना ''शिशुपालवध'' कवि की कीर्तिपताका को प्रवाहित करती हुई दृग्गोचर होती है। प्रकृत महाकाव्य में युधिष्ठिर द्वारा आयोजित राजसूययज्ञ में आहूत 'शिशुपाल' के वध का प्रसंग वर्णित है। इस महाकाव्य के प्रेरणास्रोत भागवतपुराणादि है। वहाँ से ही कथा को लेकर कवि ने इस महाकाव्य की रचना की है। कवि के काव्य में व्याकरणिक प्रयोग अधिक हुआ है। व्याकरणशास्त्र में कवि का गहन अध्ययन प्रतीत होता है।

काव्य में पद पद पर व्याकरण के विशिष्ट प्रयोगों को कवि ने निर्देशित किया है। यद्यपि अन्यान्य शास्त्र में भी कवि का ज्ञान शक्तिशाली है तथापि व्याकरण विषयक ज्ञान प्रौढ़ प्रतीत होता है। माघ का ज्ञान केवल व्याकरण शास्त्र में ही अप्रतिम नहीं है अपितु हयशास्त्र– गंजशास्त्र नाट्यशास्त्र– अलंकारशास्त्र–संगीतशास्त्रादि में भी असीम् है। माघ के काव्य में समास बहुल पदों का प्रयोग, विकटवर्णोदारता तथा गाढ़वन्धोदारता का भी सन्निवेश किया गया है। चित्रालंकार का चित्रण तो सर्वथा हृदयावर्जक है। गीति छन्दों का बाहुल्य प्रायः सर्वत्र काव्य में देखने को मिलता है। महाकाव्य की इस अनिर्वचनीय परम्परा में जैसे प्राचीन महाकवियों ने अपने वैदुष्य व रचनाओं से काव्यसंसार को आलोकित किया है ठीक उसी प्रकार से नवीन व आधुनिक कवियों ने भी अपनी अभिनव रचनाओं से नूतन काव्य का निर्माण कर प्रभूत ख्याति अर्जित की और यशों के भागी भी बने। आधुनिक कवियों की परम्परा में कविवर राजेन्द्र मिश्र का स्थान भी महत्त्वपूर्ण है। कवि मिश्रमहोदय की बहुत सी रचनाएँ प्रकाशित है। इसी क्रम में वामनावतरण महाकाव्य संस्कृतसाहित्य में विशिष्ट स्थान रखता है। 17 सर्गों में विभक्त यह महाकाव्य अर्वाचीन संस्कृतजगत् के लिए महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाएगी। यद्यपि कवि ने अपने काव्य में प्राचीनोक्त सभी सरणी को स्थान दिया है, तथापि अपने काव्य में विशेषस्थान पर विशिष्ट और रमणीय कथानकों का प्रवेश कर नवीनता का भी आधान किया है। कवि के द्वारा संनिवेशित व संयोजित नवीनांश काव्य में अधिक रमणीय बन पड़ा है। जो सहृदयों के लिए सर्वथा ग्राह्य व स्तुत्य हो गया है। जैसे भारवि ने अपने पाण्डित्य प्रदर्शन के लिए एकाक्षर काव्य का निर्माण कर ख्याति अर्जित की। ठीक उसी प्रकार मिश्रमहोदय ने भी एकाक्षर बन्ध का सन्निवेश अपने काव्य में किया है, किन्तु वह क्लिष्ट व अस्पष्ट नहीं है, अपितु सर्वजनश्लाध्य व संवेद्य है। कवि के काव्य में सर्वत्र स्पष्टता परिलक्षित होती है। मिश्र महोदय का काव्य पाण्डित्यपूर्ण व लालित्य समन्वित है। इस काव्य में प्रसादगुणयुक्त श्लोक प्रतिपद विद्यमान है। जिसके कारण अर्थावगति में कोई प्रत्यवाय उपस्थित नहीं होता है जैसा कि अधोलिखित पद्य से स्पष्ट है–

अथ विलोक्य पुरिं भयाविह्वलां
परिगतां दनुजैश्च समन्ततः।
हृदि बलाबल भावमपि स्वकं
विगणयन् मधवा भयमादधे।। (वा.अ. 4–1)

इस पद्य में बलि द्वारा परिगृहिता स्वर्ग की स्थिति को देखकर भयभीत इन्द्र का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। प्रकृत पद्य को सुनने मात्र से अर्थावगति हो जाती है। अर्थावगति में किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं होती। सहृदय पाठक सभी अर्थों का अनुसंधान सुलभता से कर लेते हैं। यह बात तो निर्विवाद सिद्ध है कि जिस काव्य में सारल्य उपलब्ध होता है वहाँ सभी बुधजन आकर्षित होते हैं। जैसा कि महर्षि वाल्मीकि प्रणीत रामायण सबों के लिए अनुकरणीय वव पठनीय है। यह सत्य है कि रामाधारित काव्य जो तुलसीदासद्वाराप्रणीत है जिसको रामचरित मानस नाम से अभिहित किया गया है उसका प्रचार व प्रसार जितना लोक में हुआ है उतना वाल्मीकिरामायण का नहीं हुआ है। वाल्मीकि की भाषा संस्कृत है तो मानस की भाषा हिन्दी है। दोनों में भेद यही है कि एक की भाषा संस्कृत है जिसमें हिन्दी की अपेक्षा कठिनाई प्रतीत होती है, फिर भी रामायण जनमानस का प्रिय साहित्य है और संसेव्य भी है। आज भी कवियों का आदर्श व उपजीव्य रामायण एवं महाभारत ही है। उसमें भी वाल्मीकि का रामयण सर्वथा ही कवियों का आदर्श है। जिसका अनुसरण कविगण करते हैं। इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए कविवर मिश्र महोदय ने संस्कृतसाहित्य के प्रायः सभी वरेण्य प्राचीन कवियों को आदर्श के रूप में स्वीकार किया है। काव्य के अनुरूप प्रत्येक सर्ग में छन्द परिवर्तन व पद्य परिवर्तन भी किया है। जैसा कि मिश्रमहोदय के काव्याध्यन से प्रतीत होता है।

यं देवी सुषुवे कवित्वशिखरं दुर्गाप्रसादान्निजे
क्रोडे शुक्तिनिभे विमौक्तिकतनुं वन्द्याभिराजीसुतम्।
श्री देवेन्द्रसुरेन्द्रमध्यममणी राजेन्द्रमिश्रोन्वसौ
हृत्तुष्ट्यै तनुते त्रिविक्रमयशो गिर्वाणवाण्याऽनघम्।। (वा.अ. 4/49)

यह बात सर्वविदित है कि काव्य की दृष्टि से जैसा पदलालित्य कालिदास के काव्य में समुपलब्ध होता है वैसा लालित्य व भावविच्छिति अन्य कवियों के काव्य में दृष्टिगोचर नहीं होता। कवि कालिदास की कविता भाव प्रधान तो है ही साथ ही हृदयपक्ष की प्रधानता भी इसमें दृष्टिगोचर होती है। माधुर्यगुण का सन्निवेश सुकोलकान्तपदावली का सन्निवेश पदों की सरसता व प्रसादगुण की स्निग्धता का प्रचुर प्रयोग कालिदास के काव्यों में देखने को मिलता है। यद्यपि कालिदास की रचनाधर्मिता व रचना साम्य मिश्रमहोदय के काव्य में समपलब्ध नहीं होता तथापि कवि का वामनावतरण महाकाव्य काव्योचित लक्षणों से सम्पन्न व हृद्यतो अवध्य ही है। कवि ने आचार्य क्षेमेन्द्र का अनुसरण करते हुए वृत्तविनियोगादि का सफल परिपाक किया है। वामनावतरण के रचयिता डॉ. राजेन्द्र मिश्र प्रत्येक सर्ग के अन्त में विनय पुरःसर स्वीकार करते हैं कि मेरा यह काव्य दैवी प्रेरणा से मन्वित है जैसा कि महाकवि श्रीहर्ष की कविता भगवती के प्रसाद से समुद्भूत हैं ठीक उसी प्रकार मिश्रमहोदय की कविता भी दैवीय शक्ति से समुद्भूत जान पड़ती है।

वामनावतरण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि प्रकृतकाव्य में रचना की रोचकता तथा विम्बप्रतिविम्ब भाव का संयोजन सर्वाधिक सफल हुआ है। सभी जगह कवियों ने काव्यं में श्रुतिमधुर कोमलकान्तपदावली का प्रयोग किया है जिससे यह काव्य संस्कृतकाव्यासाहित्य में लोकविश्रुत हो गया है। भागवत पुराण के आधार पर समुल्लिखित यह काव्य निश्चय ही कविवर मिश्र महोदय की नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा का परिचायक है। समग्रग्रन्थ सुललित वर्णनाओं से सम्पृक्त है। 17 सर्गों में विभाजित यह काव्य आधुनिक महाकाव्यों की श्रेणी में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। काव्य का नायक मेरी दृष्टि में अर्थात् शोध की दृष्टि से वामन है तो समालोचकों की दृष्टि से इन्द्र है और प्रतिनायक बलि है। इस समग्र काव्य में भगवान् वामन का स्वरूप वर्णित है। भगवान् वामन ने लोक लीलाकर जगत् के भार को दूर किया। आसुरी सम्पत्ति का नाश किया। दैवी संस्कृति की स्थापना की। बलिनिग्रह व सुतल लोक में उसको स्थापित करना इन्द्र को पुनः स्वर्ग का राज्य प्रदान करना, तीन पग पृथिवी की याचना करना ये सब लोकलीला के लिए ही है। आप्तकाम परमेश्वर को किसी से क्या माँगना है, वह तो निखिल ब्रह्माण्ड के संरक्षक व पोषक हैं। सबों के आश्रयदाता है, उनके लिए जगत् में कुछ भी काम्य नहीं है इसी लोकमर्यादा की रक्षा व लोकसंस्कृति की अक्षुण्णता के लिए सतत् तत्पर रहनेवाले भगवान् के लिए यह सब लीला, विलास व कैवल्य का मार्ग है। परमात्मा की लीला को सभी नहीं जानते भगवान् का सभी कार्य रहस्यात्मक होता है। ज्ञानियों के लिए भी अचिन्त्य व अगम्य होता है। उनकी लीलाओं को समझने में सूरी लोगों को भी व्यामोह हो जाता है। तो सामान्य जनों की बात ही क्या है? जैसा कि भागवत के प्रारम्भ में ही शुकदेव जी ने कहा है–

जन्माद्यस्य यतोन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्
तेने ब्रह्म हृदा या आदिकवये मुहान्ति यत् सूरयः।
तेजो वारि मृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गो मृषा
धाम्ना स्वेन सदा निरस्त कुहकं सत्यं परं धीमहि।।
(भागवत–1–1–1)

यही कारण है कि विश्वात्मा परमेश्वर की लीला को सभी नहीं जानते। शुक्राचार्य प्रभृति ज्ञानियों के द्वारा ही जाना जा सकता है। बलि का निग्रह भी जगत् कल्याण के लिए ही था। भगवान् वामन ने बलि के गर्व का नाश कर उसकी ही रक्षा की इन्द्र के गर्व को भी नष्ट कर पुनः विनय पुरःसर स्वर्ग पर शासन करने का आदेश दिया और उसकी मर्यादा की रक्षा की। दोनों के मान को मर्दन कर जगत् का कल्याण किया। जगत् में सुखशान्ति की स्थापना की। अत एव यह काव्य अन्य काव्य से अपनी विशिष्टता का आद्यान करता है, यह निःशंक कहा जा सकता है। कवि ने प्रकृत महाकाव्य में साभिप्राय बलिवामन के संवाद एवं रहस्यों का वर्णन किया है। कवि का काव्य चमत्कृत व झंकृत है। शोध की दृष्टि से कहा जा सकता है कि कवि ने अपने काव्य के निर्माण में पर्याप्त सफलता प्राप्त की है।

संदर्भ सूची

1. भागवत पुराण, महर्षि वेदव्यास, गीताप्रेस, गोरखपुर
2. विष्णुपुराण, आचार्य श्री रामानुज शर्मा, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी
3. अभिनव रस मीमांसा (संस्कृत), डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा, चौखम्बा संस्कृत, वाराणसी
4. किरातार्जुनीयम, डॉ. सच्चु मिश्रा, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
5. कुमारसंभवम्, मल्लिनाथ कृत, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
6. 17वीं सदी के संस्कृत महाकाव्य, डॉ. रामलखन पाण्डे, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
7. नैषध समीक्षा, डॉ. देवनारायण झा, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
8. अलंकार सर्वस्व, रामचन्द्र द्विवेदी, मोतीलाल बनारसीदास, पटना
9. काव्यप्रकाश, डा. ज्योत्सना मोहन, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली
10. भर्तृहरिशतकम, गोपीनाथ, बहियसंस्कृत संस्थान, दिल्ली